ऑगस्टीन का राज्य (Augustine State) पर नोट्स

परिचय:

सेंट ऑगस्टीन (354-430 ई.) एक महान ईसाई विचारक और दार्शनिक थे उन्होंने अपनी पुस्तक The City of God (ईश्वर का नगर) में राज्य और राजनीति की अवधारणा को समझाया

ऑगस्टीन का राज्य सिद्धांत

1. दो राज्यों की अवधारणा:

ऑगस्टीन ने दो प्रकार के राज्यों की बात की:

ईश्वर का राज्य (City of God): यह धार्मिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित होता है यह प्रेम, करुणा और न्याय से संचालित होता है

पृथ्वी का राज्य (City of Man): यह सांसारिक इच्छाओं, शक्ति और भौतिक सुखों पर आधारित होता है इसमें स्वार्थ और अहंकार का प्रभाव होता है

2. राज्य की उत्पत्ति:

ऑगस्टीन के अनुसार, राज्य का जन्म मनुष्य के पापी स्वभाव और नैतिक पतन के कारण हुआ

राज्य का मुख्य कार्य समाज में शांति और न्याय बनाए रखना है

3. राज्य और चर्च का संबंध:

उन्होंने चर्च (धार्मिक सत्ता) को राज्य (राजनीतिक सत्ता) से श्रेष्ठ माना

चर्च का उद्देश्य लोगों को ईश्वर के राज्य की ओर मार्गदर्शन देना है, जबकि राज्य का कार्य सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना है

4. न्याय और राज्य:

यदि कोई राज्य न्यायसंगत नहीं है, तो वह एक संगठित लूट के समान है

सच्चा न्याय केवल ईश्वर के राज्य में ही संभव है

5. युद्ध और शांति:

ऑगस्टीन ने "न्यायसंगत युद्ध" (Just War) की अवधारणा दी, जिसमें उन्होंने कहा कि किसी राज्य को केवल नैतिक और न्यायसंगत कारणों से ही युद्ध करना चाहिए

महत्व और प्रभाव:

उनका विचार मध्ययुगीन ईसाई राजनीतिक चिंतन का आधार बना

उनके सिद्धांतों ने चर्च और राज्य के संबंधों को प्रभावित किया

आधुनिक राजनीतिक विचारों में धर्म और नैतिकता के महत्व को समझने में उनकी भूमिका अहम रही

निष्कर्ष:

सेंट ऑगस्टीन का राज्य सिद्धांत धार्मिक और नैतिक मूल्यों पर आधारित था उन्होंने राज्य को ईश्वर की इच्छा के अधीन माना और न्याय को उसका प्रमुख उद्देश्य बताया उनका दर्शन मध्ययुगीन यूरोप की राजनीति और चर्च की भूमिका को समझने में सहायक है